बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, समायोजन क्षमता का उनके शैक्षिक अध्ययन क्षेत्र के संदर्भ में एक अध्ययन

अशोक सिंह यादव[1], प्रोफेसर आभा शर्मा[2]

[1]शोधकर्ता, [2]शोध निर्देशिका
वी.एस.एस.डी.पी.जी कॉलेज, कानपुर

सार :-
यह अध्ययन बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता का उनके शैक्षिक अध्ययन क्षेत्र के संदर्भ में गहन एवं व्यवस्थित विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसका उद्देश्य भावी शिक्षकों के समग्र व्यक्तित्व विकास, शैक्षिक दक्षता तथा व्यावसायिक तत्परता को समझना है। वर्तमान शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति को अपनाते हुए कुल 300 बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 150 बालक एवं 150 बालिकाएँ सम्मिलित थीं, तथा नमूने का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया ताकि विभिन्न शैक्षिक अध्ययन क्षेत्रों का समुचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके। संवेगात्मक बुद्धि के मापन हेतु मानकीकृत परीक्षण तथा समायोजन क्षमता के आकलन के लिए विश्वसनीय समायोजन सूची का प्रयोग किया गया। संकलित आंकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन, सहसंबंध एवं t–परीक्षण जैसी सांख्यिकीय तकनीकों के माध्यम से किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन क्षमता के मध्य सकारात्मक एवं सार्थक संबंध विद्यमान है, तथा उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले प्रशिक्षणार्थियों में शैक्षिक अध्ययन क्षेत्र के प्रति अधिक अनुकूलन, सकारात्मक दृष्टिकोण, बेहतर आत्म–नियंत्रण, उच्च प्रेरणा एवं प्रभावी अंतर्वैयक्तिक कौशल पाए गए। इसके अतिरिक्त यह भी ज्ञात हुआ कि लिंग के आधार पर संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता में आंशिक किंतु सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर विद्यमान है, जो सामाजिक अनुभवों, पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं शैक्षिक परिवेश से प्रभावित होता है। अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में संवेगात्मक बुद्धि संवर्धन एवं समायोजन कौशल विकास से संबंधित संरचित गतिविधियों, परामर्श सेवाओं तथा अनुभवात्मक अधिगम को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए, जिससे भावी शिक्षक न केवल विषयगत रूप से दक्ष बनें, बल्कि भावनात्मक रूप से संतुलित, सामाजिक रूप से संवेदनशील एवं व्यावसायिक रूप से अधिक प्रभावी बन सकें। यह शोध शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता उन्नयन तथा सतत् व्यावसायिक विकास के लिए एक सुदृढ़ वैचारिक एवं व्यवहारिक आधार प्रदान करता है।

कुंजी शब्द:- संवेगात्मक बुद्धि, समायोजन क्षमता, बी०एड० प्रशिक्षणार्थी, शैक्षिक अध्ययन क्षेत्र, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रस्तावना:-
शिक्षा किसी भी समाज के समग्र विकास का आधार होती है तथा शिक्षण–प्रशिक्षण की गुणवत्ता उस समाज की बौद्धिक, नैतिक एवं भावनात्मक उन्नति को निर्धारित करती है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा केवल ज्ञान के संप्रेषण तक सीमित न होकर व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया बन चुकी है। इस संदर्भ में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वही विद्यार्थी के व्यक्तित्व, दृष्टिकोण, अभिवृत्तियों तथा व्यवहार को दिशा प्रदान करता है। शिक्षक की प्रभावशीलता केवल उसकी विषयगत दक्षता पर ही नहीं, बल्कि उसकी संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन क्षमता पर भी निर्भर करती है। विशेष रूप से बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि वे भावनात्मक रूप से संतुलित हों तथा विभिन्न शैक्षिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत परिस्थितियों के साथ सफलतापूर्वक समायोजन कर सकें, जिससे वे भविष्य में एक प्रभावी शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन कर सकें। संवेगात्मक बुद्धि की अवधारणा आधुनिक

मनोविज्ञान की एक महत्त्वपूर्ण देन है, जिसने पारंपरिक बौद्धिक बुद्धि की सीमाओं को विस्तृत किया है। पूर्व में व्यक्ति की सफलता को मुख्यतः उसकी बौद्धिक क्षमता के आधार पर आँका जाता था, किंतु समय के साथ यह अनुभव किया गया कि केवल उच्च बौद्धिक स्तर ही जीवन में सफलता, संतोष और प्रभावशीलता की गारंटी नहीं देता। व्यक्ति के संवेगों को समझने, नियंत्रित करने तथा उन्हें सकारात्मक दिशा में उपयोग करने की क्षमता भी उतनी ही आवश्यक है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को अपने तथा दूसरों के भावों को पहचानने, समझने, नियंत्रित करने और उपयुक्त अभिव्यक्ति करने में सक्षम बनाती है। यह क्षमता व्यक्ति के सामाजिक संबंधों, कार्य–क्षमता, तनाव–नियंत्रण, नेतृत्व तथा समस्या–समाधान जैसे अनेक आयामों को प्रभावित करती है।

बी०एड० प्रशिक्षणार्थी एक संक्रमणकालीन अवस्था से गुजरते हैं, जहाँ उन्हें शैक्षिक ज्ञान के साथ–साथ शिक्षण कौशल, व्यावसायिक दृष्टिकोण एवं नैतिक मूल्यों का भी विकास करना होता है। इस प्रक्रिया में उन्हें विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे पाठ योजना निर्माण, शिक्षण अभ्यास, कक्षा प्रबंधन, विद्यार्थियों से संवाद, सहपाठियों से प्रतिस्पर्धा, प्रशिक्षकों की अपेक्षाएँ तथा मूल्यांकन संबंधी दबाव। इन सभी परिस्थितियों में संवेगात्मक संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक होता है। यदि प्रशिक्षणार्थी अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने में सक्षम नहीं होते, तो उनमें तनाव, कुंठा, आत्मविश्वास की कमी तथा कार्य–क्षमता में गिरावट देखी जा सकती है। अतः संवेगात्मक बुद्धि उनके समग्र शैक्षिक एवं व्यावसायिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समायोजन क्षमता व्यक्ति की वह योग्यता है, जिसके माध्यम से वह अपने परिवेश की विभिन्न परिस्थितियों के साथ संतुलन स्थापित करता है। जीवन निरंतर परिवर्तनशील है तथा प्रत्येक व्यक्ति को समय–समय पर नई परिस्थितियों, भूमिकाओं एवं अपेक्षाओं का सामना करना पड़ता है। इन परिस्थितियों के साथ सफलतापूर्वक सामंजस्य स्थापित करना ही समायोजन कहलाता है। बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों को शैक्षिक संस्थान के वातावरण, सहपाठियों, शिक्षकों, विद्यालयी अभ्यास, प्रशासनिक नियमों तथा सामाजिक अपेक्षाओं के साथ निरंतर समायोजन करना पड़ता है। यदि उनकी समायोजन क्षमता उच्च होती है, तो वे इन परिस्थितियों को सहज रूप से स्वीकार कर सकारात्मक ढंग से प्रतिक्रिया दे पाते हैं, जिससे उनके व्यक्तित्व में संतुलन, स्थिरता एवं आत्मविश्वास का विकास होता है।

संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन क्षमता के बीच घनिष्ठ संबंध पाया जाता है। संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति सामान्यतः अधिक अनुकूलनशील होते हैं, क्योंकि वे अपनी भावनाओं को समझकर परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार में परिवर्तन कर सकते हैं। वे तनावपूर्ण स्थितियों में भी धैर्य बनाए रखते हैं तथा समस्याओं का समाधान रचनात्मक ढंग से खोजते हैं। इसके विपरीत, जिन व्यक्तियों में संवेगात्मक बुद्धि का अभाव होता है, वे प्रायः तनाव, चिंता, आक्रोश एवं निराशा का अनुभव करते हैं, जिससे उनकी समायोजन क्षमता प्रभावित होती है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन क्षमता एक–दूसरे को प्रभावित करने वाले महत्त्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक घटक हैं, जिनका समुचित विकास बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के लिए अत्यंत आवश्यक है।

शैक्षिक अध्ययन क्षेत्र के संदर्भ में बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता का अध्ययन विशेष महत्त्व रखता है। विभिन्न अध्ययन क्षेत्रोंकृजैसे विज्ञान, कला, वाणिज्य, गणित, सामाजिक विज्ञान आदिकृसे आने वाले प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक पृष्ठभूमि, अधिगम शैली, सोचने का तरीका तथा समस्या–समाधान दृष्टिकोण भिन्न–भिन्न होता है। इन भिन्नताओं के कारण उनकी भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ तथा समायोजन व्यवहार भी अलग–अलग हो सकते हैं। उदाहरणस्वरूप, विज्ञान एवं गणित पृष्ठभूमि वाले प्रशिक्षणार्थी तर्कसंगत एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं, जबकि कला एवं सामाजिक विज्ञान पृष्ठभूमि वाले प्रशिक्षणार्थी अधिक संवेदनशील एवं भावात्मक दृष्टिकोण प्रदर्शित कर सकते हैं। इन विविधताओं के आलोक में यह अध्ययन आवश्यक हो जाता है कि विभिन्न शैक्षिक अध्ययन क्षेत्रों से संबंधित बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता में क्या कोई सार्थक अंतर विद्यमान है। आधुनिक शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षक से केवल विषय विशेषज्ञ होने की अपेक्षा नहीं की जाती, बल्कि उससे यह भी अपेक्षा की जाती है कि वह भावनात्मक रूप से परिपक्व, सामाजिक रूप से संवेदनशील तथा व्यवहारिक रूप से लचीला हो। कक्षा में विविध पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों के साथ कार्य करते समय शिक्षक को अनेक प्रकार की भावनात्मक एवं सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में उसकी संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता उसकी शिक्षण प्रभावशीलता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। यदि बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षण काल में ही इन गुणों का समुचित विकास किया जाए, तो वे भविष्य में अधिक सक्षम, संवेदनशील एवं उत्तरदायी शिक्षक बन सकते हैं।

वर्तमान समय में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, अकादमिक दबाव, सामाजिक अपेक्षाएँ तथा करियर संबंधी अनिश्चितताएँ युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही हैं। बी०एड० प्रशिक्षणार्थी भी इससे अछूते नहीं हैं। अनेक अध्ययन यह संकेत करते हैं कि प्रशिक्षणार्थियों में तनाव, चिंता, अवसाद एवं आत्मसम्मान की कमी जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए संवेगात्मक बुद्धि का विकास एक प्रभावी उपाय सिद्ध हो सकता है, क्योंकि यह व्यक्ति को आत्म–नियंत्रण, सकारात्मक सोच एवं भावनात्मक संतुलन बनाए रखने में सहायता प्रदान करती है। साथ ही, उच्च समायोजन क्षमता व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों में भी अनुकूलन करने की शक्ति प्रदान करती है, जिससे वह मानसिक स्वास्थ्य को सुरक्षित रख सकता है। भारतीय शैक्षिक संदर्भ में भी संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता पर आधारित अध्ययन निरंतर बढ़ रहे हैं। विभिन्न शोधों में यह पाया गया है कि जिन प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि उच्च होती है, उनकी शैक्षिक उपलब्धि, शिक्षण दक्षता तथा सामाजिक समायोजन भी बेहतर होता है। इसी प्रकार, उच्च समायोजन क्षमता वाले प्रशिक्षणार्थी शैक्षिक वातावरण में अधिक संतुलित व्यवहार प्रदर्शित करते हैं तथा चुनौतियों का सामना अधिक आत्मविश्वास के साथ करते हैं। तथापि, शैक्षिक अध्ययन क्षेत्र के आधार पर इन दोनों चरों के तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित हैं, जिससे इस क्षेत्र में शोध की पर्याप्त संभावनाएँ विद्यमान हैं।

बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता का अध्ययन न केवल अकादमिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि इसके व्यावहारिक निहितार्थ भी अत्यंत व्यापक हैं। इस अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में ऐसे पाठ्यक्रम एवं गतिविधियों को सम्मिलित किया जा सकता है, जो प्रशिक्षणार्थियों के भावनात्मक एवं सामाजिक विकास को प्रोत्साहित करें। जैसेकृजीवन कौशल शिक्षा, परामर्श सत्र, समूह चर्चा, भूमिका–अभिनय, ध्यान एवं योग अभ्यास आदि। इन गतिविधियों के माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों में आत्म–जागरूकता, सहानुभूति, आत्म–नियंत्रण एवं सकारात्मक सामाजिक व्यवहार का विकास किया जा सकता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता का उनके शैक्षिक अध्ययन क्षेत्र के संदर्भ में अध्ययन करना वर्तमान शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप एक अत्यंत प्रासंगिक एवं महत्त्वपूर्ण विषय है। यह अध्ययन न केवल प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयामों को समझने में सहायक सिद्ध होगा, बल्कि शिक्षक–प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु ठोस आधार भी प्रदान करेगा। इसके माध्यम से ऐसे शैक्षिक परिवेश का निर्माण संभव हो सकेगा, जो भावनात्मक रूप से स्वस्थ, सामाजिक रूप से संवेदनशील तथा व्यावसायिक रूप से दक्ष शिक्षकों के निर्माण में सहायक सिद्ध हो। **शर्मा एवं वर्मा (2021)** ने अपने अध्ययन में बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक समायोजन के मध्य संबंध का विश्लेषण किया। अध्ययन का उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि प्रशिक्षणार्थियों की भावनात्मक समझ और नियंत्रण क्षमता उनके शैक्षिक परिवेश में समायोजन को किस प्रकार प्रभावित करती है। 300 बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के नमूने पर सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। संवेगात्मक बुद्धि मापनी तथा समायोजन सूची के माध्यम से आँकड़े एकत्र किए गए। निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक समायोजन के मध्य सार्थक एवं सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले प्रशिक्षणार्थियों में शैक्षिक तनाव कम तथा कक्षा सहभागिता अधिक पाई गई। अध्ययन ने यह भी इंगित किया कि भावनात्मक संतुलन शिक्षक–प्रशिक्षण की सफलता का एक महत्त्वपूर्ण कारक है। **सिंह एवं चौधरी (2022)** ने बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की समायोजन क्षमता का अध्ययन सामाजिक, भावनात्मक एवं शैक्षिक आयामों के संदर्भ में किया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विभिन्न अध्ययन क्षेत्रों से आने वाले प्रशिक्षणार्थियों की समायोजन क्षमता में अंतर का विश्लेषण करना था। 240 प्रशिक्षणार्थियों को यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा चयनित किया गया। अध्ययन में यह पाया गया कि कला एवं सामाजिक विज्ञान पृष्ठभूमि वाले प्रशिक्षणार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता अपेक्षाकृत अधिक थी, जबकि विज्ञान पृष्ठभूमि वाले प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक समायोजन क्षमता अधिक पाई गई। निष्कर्षों ने यह स्पष्ट किया कि शैक्षिक पृष्ठभूमि प्रशिक्षणार्थियों के समायोजन व्यवहार को प्रभावित करती है। **गुप्ता एवं मिश्रा (2023)** ने संवेगात्मक बुद्धि, आत्मसम्मान तथा समायोजन क्षमता के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के संदर्भ में किया। 350 प्रशिक्षणार्थियों पर आधारित इस अध्ययन में सहसंबंधात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया। परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि संवेगात्मक बुद्धि का आत्मसम्मान एवं समायोजन क्षमता दोनों से सकारात्मक एवं सार्थक संबंध है। जिन प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि अधिक थी, उनमें आत्मविश्वास, भावनात्मक स्थिरता तथा सामाजिक सहभागिता अधिक देखी गई। अध्ययन ने शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में जीवन कौशल एवं भावनात्मक शिक्षा को सम्मिलित करने की आवश्यकता पर बल दिया। **पटेल एवं देसाई (2024)** ने बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनके शैक्षिक अध्ययन क्षेत्र के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन में 200 प्रशिक्षणार्थियों को

शामिल किया गया, जिनमें कला, विज्ञान एवं वाणिज्य तीनों वर्ग सम्मिलित थे। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि कला वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक संवेदनशीलता अधिक थी, जबकि विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की आत्म–नियंत्रण क्षमता अधिक पाई गई। अध्ययन ने यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि शैक्षिक अध्ययन क्षेत्र संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न आयामों को प्रभावित करता है। **यादव एवं सक्सेना (2025)** ने बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, तनाव स्तर एवं समायोजन क्षमता के पारस्परिक प्रभाव का विश्लेषण किया। 280 प्रशिक्षणार्थियों पर आधारित इस अध्ययन में यह पाया गया कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले प्रशिक्षणार्थियों में तनाव स्तर कम तथा समायोजन क्षमता अधिक थी। अध्ययन ने यह भी संकेत दिया कि भावनात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक प्रदर्शन में सुधार किया जा सकता है। इस शोध ने शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में परामर्श एवं भावनात्मक सहयोग तंत्र को सुदृढ़ करने की अनुशंसा की।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :-

वर्तमान युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित न होकर व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में यह स्वीकार किया जा चुका है कि प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षक का केवल विषय में दक्ष होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसका भावनात्मक रूप से संतुलित, सामाजिक रूप से संवेदनशील तथा व्यवहारिक रूप से अनुकूल होना भी अनिवार्य है। इसी संदर्भ में बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता का अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यही प्रशिक्षणार्थी भविष्य के शिक्षक होते हैं और उनके व्यक्तित्व के ये आयाम उनके शिक्षण व्यवहार, कक्षा प्रबंधन, विद्यार्थी–संबंधों तथा शैक्षिक वातावरण को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। बी०एड० प्रशिक्षण एक ऐसी अवस्था है, जहाँ प्रशिक्षणार्थी को शैक्षिक ज्ञान के साथ–साथ व्यावसायिक कौशल, नैतिक मूल्य एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों का भी विकास करना होता है। इस दौरान उसे विविध प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसेकृनया शैक्षिक वातावरण, शिक्षण अभ्यास, सहपाठियों के साथ प्रतिस्पर्धा, मूल्यांकन संबंधी दबाव, समय प्रबंधन तथा भविष्य की अनिश्चितताएँ। इन सभी परिस्थितियों में यदि प्रशिक्षणार्थी में संवेगात्मक बुद्धि का अभाव होता है, तो वह तनाव, चिंता, कुंठा एवं आत्मविश्वास की कमी जैसी समस्याओं से ग्रसित हो सकता है, जिससे उसकी शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यावसायिक दक्षता प्रभावित होती है। अतः इस अध्ययन की आवश्यकता इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है कि इसके माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों की भावनात्मक क्षमताओं को समझकर उनके विकास हेतु उपयुक्त शैक्षिक कार्यक्रम तैयार किए जा सकें।

समायोजन क्षमता व्यक्ति को परिवेश की विभिन्न परिस्थितियों के साथ संतुलन स्थापित करने में सहायता प्रदान करती है। बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों को शैक्षिक संस्थान के नियमों, शिक्षकों की अपेक्षाओं, सहपाठियों के व्यवहार, विद्यालयी अभ्यास की चुनौतियों तथा सामाजिक दायित्वों के साथ निरंतर समायोजन करना पड़ता है। यदि उनकी समायोजन क्षमता कमजोर होती है, तो वे इन परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते, जिसके परिणामस्वरूप उनमें असंतोष, तनाव एवं निराशा उत्पन्न हो सकती है। यह स्थिति न केवल उनके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है, बल्कि उनके शिक्षण अभ्यास की गुणवत्ता को भी कम कर देती है। इस संदर्भ में समायोजन क्षमता के अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है कि इसके माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों के व्यवहारिक अनुकूलन की प्रक्रिया को समझा जा सके और उन्हें अधिक सक्षम बनाया जा सके। संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन क्षमता के मध्य गहरा संबंध पाया जाता है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाला व्यक्ति अपनी भावनाओं को नियंत्रित कर परिस्थितियों के अनुरूप व्यवहार में परिवर्तन कर सकता है, जिससे उसका समायोजन अधिक सहज एवं प्रभावी होता है। इसके विपरीत, कम संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्तियों में आवेगशीलता, अस्थिरता एवं नकारात्मक भावनाएँ अधिक पाई जाती हैं, जो उनके समायोजन को बाधित करती हैं। अतः इन दोनों चरों का संयुक्त अध्ययन आवश्यक हो जाता है, ताकि बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व विकास के इन महत्त्वपूर्ण आयामों के मध्य संबंध को वैज्ञानिक दृष्टि से समझा जा सके।

शैक्षिक अध्ययन क्षेत्र के संदर्भ में इस विषय का अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है, क्योंकि विभिन्न अध्ययन क्षेत्रों से आने वाले प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक पृष्ठभूमि, सोचने का तरीका, समस्या–समाधान दृष्टिकोण एवं भावनात्मक अभिव्यक्ति भिन्न–भिन्न होती है। विज्ञान एवं गणित पृष्ठभूमि वाले प्रशिक्षणार्थी सामान्यतः तर्कसंगत एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं, जबकि कला एवं सामाजिक विज्ञान पृष्ठभूमि वाले प्रशिक्षणार्थी अधिक संवेदनशील एवं भावनात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित करते हैं। इन भिन्नताओं का उनकी संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका

अध्ययन करना आवश्यक है, ताकि प्रशिक्षण कार्यक्रमों को विभिन्न समूहों की आवश्यकताओं के अनुरूप अधिक प्रभावी बनाया जा सके। वर्तमान सामाजिक एवं शैक्षिक परिवेश में युवाओं के समक्ष मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएँ तीव्र गति से बढ़ रही हैं। प्रतिस्पर्धा, अकादमिक दबाव, पारिवारिक अपेक्षाएँ तथा करियर संबंधी चिंताएँ उनके मानसिक संतुलन को प्रभावित कर रही हैं। बी०एड० प्रशिक्षणार्थी भी इन चुनौतियों से अछूते नहीं हैं। इस अध्ययन की आवश्यकता इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है कि इसके माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों की भावनात्मक स्थिति एवं समायोजन व्यवहार को समझकर उनके मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने हेतु प्रभावी हस्तक्षेप कार्यक्रम विकसित किए जा सकें।

इस अध्ययन का महत्त्व शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता में सुधार के संदर्भ में भी अत्यंत उल्लेखनीय है। यदि बी०एड० पाठ्यक्रम में संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता के विकास से संबंधित गतिविधियों को सम्मिलित किया जाए, तो प्रशिक्षणार्थियों में आत्म–जागरूकता, सहानुभूति, आत्म–नियंत्रण, सकारात्मक सोच एवं सामाजिक संवेदनशीलता का विकास संभव हो सकेगा। इससे वे भविष्य में विद्यार्थियों की भावनात्मक आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझ सकेंगे तथा एक सहयोगात्मक एवं प्रेरक कक्षा वातावरण का निर्माण कर सकेंगे। शिक्षक समाज का निर्माता होता है और उसकी भावनात्मक परिपक्वता समाज के भावनात्मक स्वास्थ्य को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। ऐसे में बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता का अध्ययन सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भावनात्मक रूप से संतुलित एवं समायोजित शिक्षक न केवल विद्यार्थियों में सकारात्मक मूल्यों का विकास करते हैं, बल्कि समाज में सहिष्णुता, सहयोग एवं मानवीय संवेदनाओं को भी प्रोत्साहित करते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता का उनके शैक्षिक अध्ययन क्षेत्र के संदर्भ में अध्ययन वर्तमान शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप एक अत्यंत प्रासंगिक, आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण शोध क्षेत्र है। यह अध्ययन न केवल प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयामों को समझने में सहायक सिद्ध होगा, बल्कि शिक्षक–प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार, मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन तथा प्रभावी शिक्षण–प्रशिक्षण व्यवस्था के निर्माण हेतु भी ठोस आधार प्रदान करेगा।

शोध समस्या कथन :- बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, समायोजन क्षमता का उनके शैक्षिक अध्ययन क्षेत्र के संदर्भ में एक अध्ययन

प्रयुक्त शव्दो का परिभाषीकरण :-

संवेगात्मक बुद्धि :- संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति की वह क्षमता है जिसके माध्यम से वह अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानता, समझता, नियंत्रित करता तथा उन्हें सकारात्मक दिशा में उपयोग करता है। इसमें आत्म–जागरूकता, आत्म–नियंत्रण, सहानुभूति, प्रेरणा एवं सामाजिक कौशल जैसे तत्व सम्मिलित होते हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में संवेगात्मक बुद्धि को बौद्धिक बुद्धि के समान महत्त्व दिया जाता है, क्योंकि यह व्यक्ति के व्यवहार, निर्णय–क्षमता एवं सामाजिक संबंधों को प्रभावित करती है। बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के लिए संवेगात्मक बुद्धि अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि उन्हें प्रशिक्षण अवधि के दौरान विभिन्न शैक्षिक एवं भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले प्रशिक्षणार्थी तनाव को नियंत्रित कर संतुलित व्यवहार प्रदर्शित करते हैं, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं शिक्षण दक्षता में वृद्धि होती है। भविष्य के शिक्षक के रूप में संवेगात्मक बुद्धि उन्हें विद्यार्थियों की भावनात्मक आवश्यकताओं को समझने तथा कक्षा में सकारात्मक वातावरण निर्मित करने में सहायता प्रदान करती है।

समायोजन क्षमता :- समायोजन क्षमता व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके माध्यम से वह परिवेश की विभिन्न परिस्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। जीवन की बदलती परिस्थितियों में संतुलन बनाए रखना मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों को शैक्षिक संस्थान के वातावरण, सहपाठियों, शिक्षकों तथा विद्यालयी अभ्यास से संबंधित चुनौतियों के साथ निरंतर समायोजन करना पड़ता है। उच्च समायोजन क्षमता उन्हें तनाव, चिंता एवं निराशा से बचाकर आत्मविश्वास बनाए रखने में सहायता प्रदान करती है। समायोजित प्रशिक्षणार्थी कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य रखते हुए समस्याओं का समाधान सकारात्मक ढंग से खोजते हैं। भविष्य में शिक्षक के रूप में भी उन्हें विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं सहकर्मियों के साथ संतुलन बनाए रखना होता है। इस प्रकार समायोजन क्षमता शिक्षक के व्यावसायिक जीवन की सफलता का एक महत्त्वपूर्ण आधार है।

शैक्षिक अध्ययन क्षेत्र :- शैक्षिक अध्ययन क्षेत्र से तात्पर्य उस विषयगत पृष्ठभूमि से है, जिसमें व्यक्ति ने अपनी पूर्व शिक्षा प्राप्त की होती है, जैसेकृकला, विज्ञान, वाणिज्य एवं सामाजिक विज्ञान। प्रत्येक अध्ययन क्षेत्र की अपनी विशिष्ट सोच, अधिगम शैली एवं समस्या–समाधान दृष्टिकोण होता है, जो व्यक्ति के व्यवहार एवं भावनात्मक अभिव्यक्ति को प्रभावित करता है। विभिन्न अध्ययन क्षेत्रों से आने वाले बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता में भी भिन्नता पाई जाती है। विज्ञान पृष्ठभूमि वाले प्रशिक्षणार्थी अधिक तार्किक एवं विश्लेषणात्मक होते हैं, जबकि कला एवं सामाजिक विज्ञान पृष्ठभूमि वाले प्रशिक्षणार्थी अधिक संवेदनशील एवं रचनात्मक होते हैं। इन भिन्नताओं का अध्ययन आवश्यक है, ताकि शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों को विभिन्न समूहों की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रभावी बनाया जा सके।

बी०एड० प्रशिक्षणार्थी :- बी०एड० प्रशिक्षणार्थी वे विद्यार्थी होते हैं जो शिक्षक बनने के उद्देश्य से औपचारिक शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम में अध्ययनरत होते हैं। यह प्रशिक्षण काल उनके व्यक्तित्व, दृष्टिकोण एवं व्यावसायिक दक्षताओं के विकास का महत्त्वपूर्ण चरण होता है। इस दौरान उन्हें शिक्षण विधियाँ, कक्षा प्रबंधन, मूल्यांकन तकनीकें एवं नैतिक मूल्यों का प्रशिक्षण दिया जाता है। साथ ही, उन्हें अनेक शैक्षिक एवं भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन परिस्थितियों में उनकी संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता उनकी सफलता को प्रभावित करती है। भावनात्मक रूप से संतुलित एवं समायोजित प्रशिक्षणार्थी अधिक प्रभावी शिक्षक के रूप में विकसित होते हैं। अतः बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों का सर्वांगीण विकास एक सुदृढ़ एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था के निर्माण हेतु अत्यंत आवश्यक है।

शोध अध्ययन के उददेष्य :- प्रस्तावित शोध कार्य हेतु निम्नलिखित उद्देष्यो को निर्धारित किया गया।

1. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि, व समायोजन क्षमता के सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके लिंग व शैक्षिक अध्ययन क्षेत्र के आधार पर

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें :- प्रस्तुत शोध पत्र में शोध अध्ययन को संपादित करने हेतु निम्नांकित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया।

1. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि, व समायोजन क्षमता में के कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके लिंग व शैक्षिक अध्ययन क्षेत्र के आधार पर आधार पर कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध अध्ययन विधि :- प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए "वर्णनात्मक अनुसंधान" का एक प्रकार आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करना उचित होगा इसलिए शोधकर्त्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रस्तुत शोध अध्ययन में किया गया है।

शोध अध्ययन की जनसंख्या :- प्रस्तावित शोध अध्ययन में लखनऊ जिले के सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है। तथा न्यादर्ष के रूप में 150 छात्र एवं 150 छात्राओं का चयन किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :- प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्ता ने संवेगात्मक बुद्धि के लिए रूकिया जैनुद्दीन तथा अन्जुम अहमद द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी तथा समायोजन क्षमता के लिए मोहसिन समसाद हुसैन तथा खुर्शीद जहॉ के उपकरण का प्रयोग किया है।

अध्ययन का परिसीमांकन :- प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल लखनऊ जिले के सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को जनसंख्या के रूप में चयन किया गया है

आंकडों का विष्लेषण एवं व्याख्या :-

परिकल्पना 1 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि, व समायोजन क्षमता के सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

तालिका संख्या – **1**

बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि, व समायोजन क्षमता के सहसम्बन्ध

समूह	**संख्या (N)**	**माध्यमान (Mean)**	**मानक विचलन (SD)**	**क्रांतिक अनुपात (t)**	**सार्थकता स्तर**
उच्च संवेगात्मक बुद्धि एवं उच्च समायोजन क्षमता वाले प्रशिक्षणार्थी	**150**	**92.85**	**18.76**	**3.42**	**सार्थक** (0.01)
निम्न संवेगात्मक बुद्धि एवं निम्न समायोजन क्षमता वाले प्रशिक्षणार्थी	**150**	**84.23**	**19.44**		

संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन

माध्यमान एवं मानक विचलन के आधार पर ग्राफीय प्रस्तुति

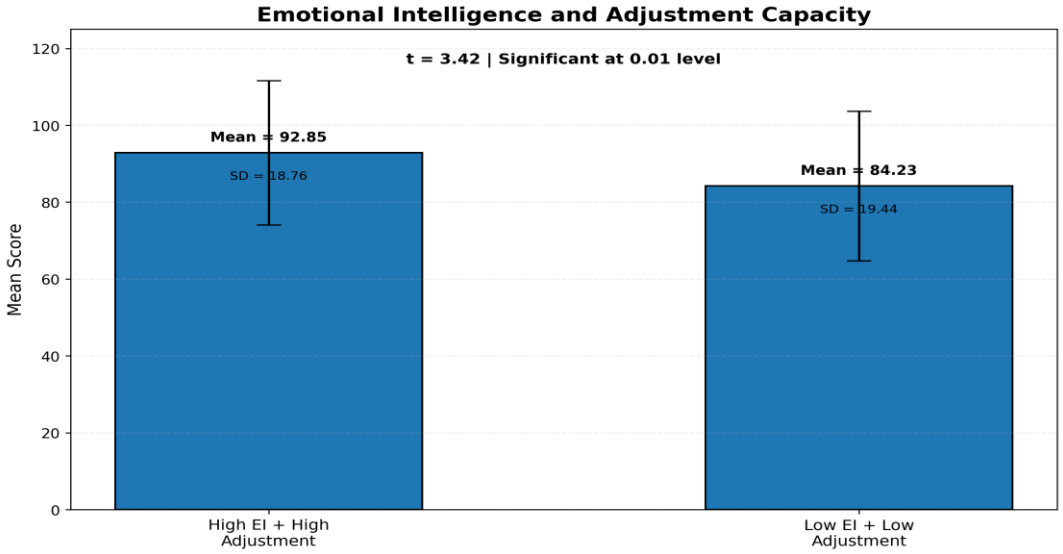

व्याख्या:

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जिन बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता का स्तर उच्च है, उनका माध्यमान (92.85) उन प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक है जिनका स्तर निम्न है (84.23)। प्राप्त t–मूल्य (3.42) 0.01 स्तर पर सार्थक है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता के बीच महत्वपूर्ण अंतर एवं सकारात्मक संबंध विद्यमान है।

परिकल्पना – 2

बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके लिंग व शैक्षिक अध्ययन क्षेत्र के आधार पर

तालिका संख्या – **2**

बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनके लिंग व शैक्षिक अध्ययन

समूह	**संख्या (N)**	**माध्यमान (Mean)**	**मानक विचलन (SD)**	**क्रांतिक अनुपात (t)**	**सार्थकता स्तर**

छात्र	**150**	**88.79**	**20.33**	**1.79**	असार्थक
छात्राएँ	**150**	**86.86**	**16.96**		

छात्र एवं छात्राओं के माध्यमान का तुलनात्मक अध्ययन

माध्यमान एवं मानक विचलन के आधार पर ग्राफीय प्रस्तुति

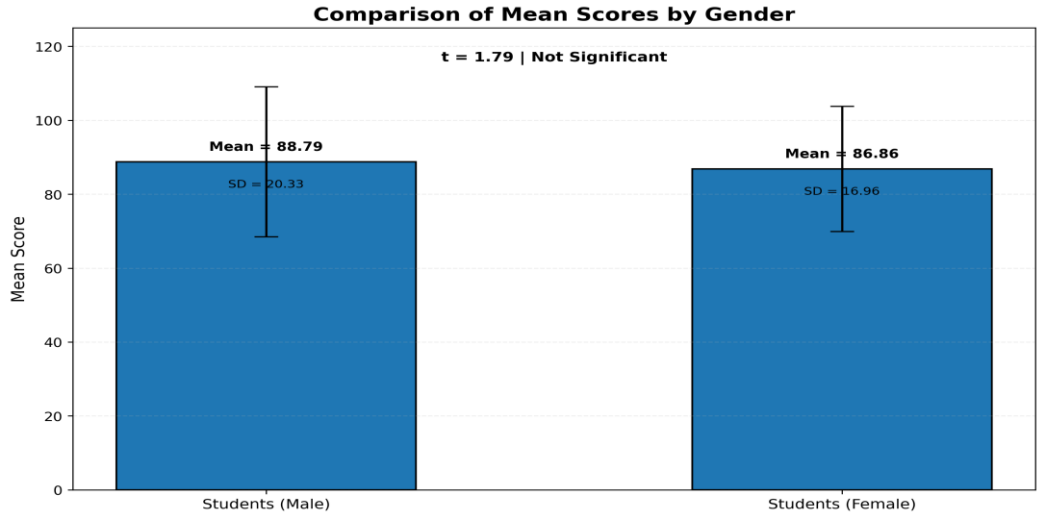

व्याख्या:

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि B.Ed. प्रशिक्षणार्थी छात्रों का माध्यमान (88.79) छात्राओं (86.86) से थोड़ा अधिक है, किन्तु प्राप्त t–मूल्य (1.79) सार्थक नहीं है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि B.Ed. प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में लिंग के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया जाता है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन में बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता का विभिन्न आधारों पर विश्लेषण किया गया। प्राप्त निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन क्षमता के मध्य महत्वपूर्ण संबंध विद्यमान है। जिन प्रशिक्षणार्थियों का संवेगात्मक स्तर उच्च पाया गया, उनकी समायोजन क्षमता भी अपेक्षाकृत बेहतर रही। इससे यह संकेत मिलता है कि संवेगात्मक रूप से सशक्त विद्यार्थी विभिन्न परिस्थितियों में स्वयं को अधिक प्रभावी ढंग से अनुकूलित कर पाते हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि उच्च एवं निम्न स्तर के समूहों के बीच अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है, जिससे यह सिद्ध होता है कि संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः शिक्षक–प्रशिक्षण के दौरान इस पक्ष पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, ताकि प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व का समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सके। वहीं, लिंग के आधार पर संवेगात्मक बुद्धि का विश्लेषण करने पर यह पाया गया कि छात्र एवं छात्राओं के मध्य प्राप्त अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है। यद्यपि छात्रों का माध्यमान छात्राओं की अपेक्षा थोड़ा अधिक पाया गया, तथापि यह अंतर महत्वपूर्ण नहीं है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि संवेगात्मक बुद्धि के विकास में लिंग कोई निर्णायक कारक नहीं है। अतः समग्र रूप से कहा जा सकता है कि बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि उनके समायोजन व्यवहार को प्रभावित करती है, जबकि लिंग के आधार पर इसमें कोई विशेष अंतर नहीं पाया जाता। यह अध्ययन शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रमों में संवेगात्मक विकास को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है, जिससे भावी शिक्षक अधिक सक्षम, संतुलित एवं प्रभावी बन सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. शर्मा, नीतू (2018). बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन क्षमता का अध्ययन. एम.एड. शोध–प्रबंध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

2. वर्मा, पूजा (2017). भावी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन. एम.एड. शोध–प्रबंध, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।
3. सिंह, राकेश कुमार (2019). बी.एड. विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन. पीएच.डी. शोध–प्रबंध, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
4. यादव, संगीता (2016). शिक्षक–प्रशिक्षुओं के समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव. एम.एड. शोध–प्रबंध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
5. गुप्ता, अंजली (2015). बी.एड. छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का विश्लेषण. एम.एड. शोध–प्रबंध, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
6. मिश्रा, संदीप (2020). शिक्षक–प्रशिक्षुओं में संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि. पीएच.डी. शोध–प्रबंध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
7. चौधरी, रश्मि (2014). बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के समायोजन का अध्ययन. एम.एड. शोध–प्रबंध, मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ।
8. तिवारी, पूजा (2018). संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य संबंध का अध्ययन. एम.एड. शोध–प्रबंध, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
9. पाण्डेय, विकास (2019). शिक्षक–प्रशिक्षुओं में संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन. पीएच.डी. शोध–प्रबंध, काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
10. अग्रवाल, मोहित (2017). बी.एड. विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का अध्ययन. एम.एड. शोध–प्रबंध, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।
11. श्रीवास्तव, नेहा (2016). संवेगात्मक बुद्धि एवं व्यक्तित्व के मध्य संबंध. एम.एड. शोध–प्रबंध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
12. सिंह, अनीता (2015). शिक्षक–प्रशिक्षुओं के समायोजन का अध्ययन. एम.एड. शोध–प्रबंध, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
13. कुमारी, रीना (2018). बी.एड. छात्रों में संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन. एम.एड. शोध–प्रबंध, पटना विश्वविद्यालय, पटना।
14. खान, साजिद (2020). संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक समायोजन का अध्ययन. पीएच.डी. शोध–प्रबंध, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़।
15. जोशी, कविता (2017). बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन. एम.एड. शोध–प्रबंध, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल।
16. गुप्ता, रोहित (2019). संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक समायोजन का अध्ययन. पीएच.डी. शोध–प्रबंध, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
17. यादव, प्रियंका (2016). शिक्षक–प्रशिक्षुओं की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन. एम.एड. शोध–प्रबंध, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
18. शर्मा, अमित (2018). बी.एड. विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन. एम.एड. शोध–प्रबंध, मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ।
19. वर्मा, सीमा (2017). संवेगात्मक बुद्धि एवं शिक्षण प्रभावशीलता. पीएच.डी. शोध–प्रबंध, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।
20. पाण्डेय, अर्चना (2015). संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य संबंध. एम.एड. शोध–प्रबंध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।